‘सलाम’ कहानी में दलित विमर्श का चित्रण

डॉ. पोपट भावराव बिरारी
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
म. वि. प्र. समाज संचालित,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय त्र्यंबकेश्वर, जि. नासिक
ईमेल– popatbirari@gmail.com
मो. 9850391121

साहित्यकार साहित्य के माध्यम से सामाजिक भेदभाव की समस्या पर प्रकाश डालता है ओमप्रकाश वाल्मीकि की ‘सलाम’ यह लोकप्रिय कहानी है । इसमें दलित साहित्य की वेदना, विद्रोह हैं तो समकालीन ग्रामीण जीवन के सामाजिक परिवेश को इस कहानी में उभारा गया है । दलित कहानी लेखन परंपरा में सर्वप्रथम नाम ओमप्रकाश वाल्मीकि की ‘सलाम’ कहानी का आता है, यह हिंदी की सबसे चर्चित कहानी है । ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी दलित साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं । हिंदी दलित साहित्य में वाल्मीकि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । उनकी रचनाएँ दलित जीवन के भोगे हुए यथार्थ के विविध पहलुओं से भरी पड़ी हैं ।

कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कहानी के आरंभ में ही दलित समाज की बारात में शामिल लोगों को जो कष्ट उठाने का चित्रण किया है । बारातियों से बदतर दशा दूल्हे ‘हरीश’ और उसके दोस्त ‘कमल’ की हुई है । बहुत ज्यादा थके हुए होने के बावजूद उन्हें आराम से बैठकर पैर फैलाने एवं पीठ टिकाने भर के लिए जगह नहीं मिल रही है । यहाँ से व्यथा का सिलसिला शुरू होता है जो थमने का नाम ही नहीं लेता। सुबह होते ही ‘कमल’ को चाय की खोज में भटकना पड़ता है । गाँव में एक जगह चाय की दुकान तो मिल है जाती है, लेकिन वह दलितों का बाराती होने के उसे भी दलित समझा जाता है । ग्रामीण परिवेश में छुआछूत का पालन इस हद तक किया जाता है कि कहानी का चरित्र ‘कमल उपाध्याय’

भले ही ब्राह्मण बिरादरी से ताल्लुक रखता हो लेकिन वह चाय से भी वंचित रह जाता है क्योंकि वह चूहड़ों की बारात में शामिल हुआ था ।

कहानी के नायक 'हरीश' को भी जातिगत भेदभाव के दुःखद अनुभव से गुजरकर अपमानित होना पड़ता है । हरीश के इस करुण अनुभव से पाठकों को 'कमल' ही परिचित कराता है । इस घटना का स्थान 'कमल' का अपना घर ही है । इसके बाद कहानी का सबसे बड़ा प्रसंग आता है, जिसमें दलित जीवन की मूल संवेदना अभिव्यक्त होती है । वह प्रसंग है– "दलितों को शादी के बाद सवर्णों के दरवाजे पर 'सलाम' करने के रिवाज का सख्ती से पालन करने की मजबूरी यह रिवाज दलितों के सम्मान एवं स्वाभिमान पर चोट करता है और उनके आत्मविश्वास को कमजोर करता है ।"[1] कहानी में वह गाँव है जो पुरानी मान्यताओं, रूढ़ियों में फँसा हुआ है । वह आजादी के कई सालों बाद भी वर्णव्यवस्था की जड़वादी मानसिकता से उबर नहीं पाया है । गाँव की कुत्सित मानसिकता का पहला उदाहरण चायवाले बूढ़े आदमी के रूप में सामने आता है । पहले तो वह बूढ़ा कमल को चाय देने के लिए राजी हो जाता है, लेकिन जब उसे पता चलता है कि 'कमल' जुम्मन चुहड़ों का बाराती है यानी दलित है तब वह चाय देने से साफ इनकार कर देता है । चायवाला कहता है "ये पैसे सहर में जाके दिखाना। दो पैसे हो गए जेब में तो सारी दुनिया को सिर पे ठाये घूमो ... यह सहर नहीं गाँव है ... यहाँ चूहड़े– चमारों को मेरी दुकान में चाय ना मिलती ... कहीं और जाकर पियो।"[2] मसला यहीं खत्म नहीं होता है और इसमें अन्य लोग भी जुड़ जाते हैं, जिसमें 'रामपाल' पहलवान है जो गाँव के बल्लू रांघड का आदमी है । वह बूढ़े का पक्षधर बनकर खड़ा होता है और 'कमल' को धमकाता है "जा चुपचाप चला जा... वरना एक भी जिंदा वापस ना जा सकेगा, ना बो लौंडिया ही जा पाएगी।"[3] सदियों से दलित उत्पीड़न की घटनाएँ होती है । आज भी गाँव में दलित स्त्री और पुरुष दोनों भयभीत, उत्पीड़ित और असुरक्षित हैं । दलितों को हिंसा का शिकार बनाया जाता है ।

आजादी के कई सालों बाद भी दलितों की हालत में कोई अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया है । आज भी दलितों को ही गंदगी साफ करने का काम करना पड़ता है । कहानी के नायक 'हरीश' के पिता नगरपालिका में सफाई कर्मचारी हैं । उसकी सासू माँ गाँव में कई परिवारों में साफ–सफाई का काम करती थी। यह दलित जीवन की वास्तविकता है । बात केवल दलितों के जन्म आधारित व्यवसाय तक ही सीमित नहीं है ।

'सलाम' कहानी में जातिवाद, छुआछूत के कई उदाहरण मिलते हैं । जैसे कि एक बुजुर्ग कमल को नया बाराती पाकर उसकी बिरादरी पूछता है । कमल को चायवाला बूढ़ा चूहड़े का बाराती होने से चाय देने से मना कर देता है । 'कमल' की माँ का हरीश की जाति जानकर उसके प्रति किया गया बर्ताव तो दिल दहला देनेवाला है । कहानी में 'कमल' और 'हरीश' बचपन से मित्र रहे हैं । एक दिन 'हरीश' 'कमल' के साथ उसके घर चला जाता है । 'कमल' की माँ दोनों को खाना परोसती है । दोनों खाना खाने बैठ जाते हैं । 'हरीश' पहला निवाला अपने मुख में रखने वाला होता है तभी 'कमल' की माँ उससे पूछती है कि तुम्हारे पिताजी क्या काम करते हैं । 'हरीश' बिना हिचकिचाहट के बता देता है कि वह नगरपालिका में सफाई कर्मचारी हैं । यह सुनकर कमल की माँ आग बबूला होकर 'कमल' को जोरदार थप्पड़ मारती है और कहती है "पता नहीं कहाँ–कहाँ से इन कंजड़ों को पकड़कर घर ले आता है । खबरदार जो आगे से किसी हरामी को दुबारा यहाँ लाया..."[4] माँ ने 'हरीश' को गालियाँ देकर भगा दिया और उसके जाने के बाद घर को दुबारा धोया एवं गंगाजल छिड़ककर जमीन को पवित्र किया। स्पष्ट है कि दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है है ।

दलित जीवन के इन पहलुओं का विवेचन इस कहानी के परिप्रेक्ष्य में हम इस प्रकार कर रहे हैं । समाज में छोटे–बड़े तथा उच्च–निम्न का निर्णय आर्थिक पैमाने पर सुनिश्चित किया जाता है । दलित अपनी आजीविका के लिए ज्यादातर शारीरिक श्रम के काम करते हैं । वे साफ–सफाई से लेकर हर वह काम करते हैं, जिसे करने में दूसरे आदमी परहेज करते हैं । रात–दिन मेहनत करने के बावजूद दलितों की आर्थिक स्थिति में बदलाव नहीं आया है । आजादी के बाद भी कुछ गिने–चुने लोगों को छोड़कर दलितों की वही स्थिति बनी हुई है ।

'सलाम' कहानी दलितों की आर्थिक स्थिति को उजागर करते हुए उनके जीवन संघर्ष को प्रस्तुत करती है । कहानी में कई आर्थिक संदर्भ मिलते हैं, जो दलित जीवन की कठिनाइयों को रेखांकित करते हैं । कहानी में 'हरीश' को अपने छोटेपन का अहसास तब होता है, जब वह 'कमल' के घर जाता है । 'कमल' की माँ उसके पिताजी के काम के संदर्भ में पूछती है और यह जानकर उसे घर से बाहर गालियाँ देते हुए निकाल देती है कि उसके पिता नगरपालिका में सफाई कर्मचारी हैं । इस भेदभाव का कारण जितनी जातिवादी मानसिकता है, उतनी ही आर्थिक विषमता भी है । कहानी में दूसरा आर्थिक

संदर्भ तब आता है, जब हरीश को शादी के बाद रस्म के रूप में गाँव के रांघड़ों के घर 'सलाम' करने के लिए जाने को कहा जाता है । चूँकि 'हरीश' की सास गाँव में कई परिवारों में साफ–सफाई का काम करने के लिए जाती है । एक ओर 'हरीश' और उसके पिताजी इस बात से इनकार करते हैं, तो दूसरी ओर 'हरीश' का ससुर कहता है 'सलाम' पे तो जाना ही पड़ेगा। और फिर जल में रहकर मगरमच्छ से बैर रखना तो ठीक नहीं है । और इसी बहाने कपड़ा–लत्ता, बर्तन–भांडे भी नेग–दस्तूर में आ जाते हैं । कहीं न कहीं समाज की जड़ें अर्थ तत्व से ही तो जुड़ी हुई हैं ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानी में दलितों की शैक्षिक स्थिति को भी संदर्भित किया है । कहानी का नायक 'हरीश' एक सुशिक्षित दलित युवक है और उसकी होनेवाली पत्नी ने भी दसवीं तक पढ़ाई पूरी की है । हरीश के पिताजी नगरपालिका में कर्मचारी हैं, जबकि उसके ससुर जुम्मन ऋषिकेश में सरकारी कर्मचारी हैं । दलित शिक्षा के साथ जुड़ रहे हैं और अपनी स्थिति में सुधार करने हेतु शिक्षा को महत्त्वपूर्ण माध्यम मान रहे हैं । प्रस्तुत कहानी में जमींदार बल्लू रांघड 'हरीश' के ससुर जुम्मन पर न केवल अपना हुकुम चलाता है, बल्कि उन्हें शिक्षा से दूर रहने की सख्त हिदायत देता है । दलित समाज पढ़–लिखकर आगे बढ़े और उनकी अधीनता से मुक्ति प्राप्त कर सके। यह सभी संदर्भ दलित जीवन में शिक्षा के बढ़ते महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं । आधुनिक शिक्षा की प्राप्ति से दलितों के जीवनयापन का स्तर ऊँचा हो रहा है । आधुनिक शिक्षा के महत्त्व को दलित समाज भलीभांति समझ गये हैं । इसी शिक्षा के माध्यम से वे अपने जन्म आधारित कर्म से मुक्ति पाकर रोजगार के नये अवसर खोज रहे हैं । गाँव के जमींदार की गुलामी से आजादी प्राप्त कर रहे हैं ।

'सलाम' कहानी दलितों के सामाजिक बड़ी शिद्दत से उभारती है । प्रस्तुत कहानी में दलितों की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति, वास्तविकता को विवाह प्रसंग के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली है । कहानी का नायक 'हरीश' दलित है । उसकी शादी गाँव में हो रही थी। उसकी शादी में उसका मित्र 'कमल' भी शामिल हुआ है । चूहड़े की बारातियों के लिए जरूरी पानी, बिजली और जगह न मिलना गाँव में दलितों की सामाजिक दशा का परिचायक है । 'कमल' को दलित बाराती कहकर चाय से वंचित रखना भी गाँव में दलितों की वास्तविक स्थिति को रेखांकित करता है । 'हरीश' को छुआछूत के अनुभव से गुजरना पड़ता है । उसका यह अनुभव सामाजिक भेदभाव का मार्मिक उदाहरण है । ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम' कहानी की केंद्रीय संवेदना दलितों की सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति से जुड़ी हुई है । इस कहानी में

दलित समाज द्वारा सदियों से निभाई जा रही 'सलाम' की रस्म का संवेदनशील चित्रण मिलता है । 'सलाम' की यह प्रथा ही कहानी के केंद्र में है, जिसे दलितों के पूर्वज बिना सहमति के चलाये जा रहे हैं । दामाद हो या नई–नवेली दुल्हन 'सलाम' के लिए घर–घर जाने का रिवाज है, जो पुरखों ने बनाया था । यह सभी संदर्भ दलितों के सांस्कृतिक जीवन की वास्तविकता रेखांकित करते हैं । कहानी में दलितों के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन अनुभवों की सटीक अभिव्यक्ति मिलती है ।

प्रस्तुत कहानी का मुख्य चरित्र 'हरीश' है । वह एक पढ़ा–लिखा दलित युवक है । उसमें उचित– अनुचित का विवेक है इसीलिए वह 'सलाम' जैसी रस्म का विरोध करता है । "यह कहानी समाज में शिक्षित होकर पुरानी परंपराओं से लड़ने व मुक्त होने का संकेत दे रही है । जो शिक्षा से ही संभव है ।"[5] 'हरीश' में यह हिम्मत शिक्षा की बदौलत है । शिक्षा ही मनुष्य के बुनियादी विचारों में परिवर्तन लाती है और उसे पारंपरिक रिवाजों की समालोचना करने की शक्ति प्रदान करती है । 'सलाम' कहानी में दलित जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है ।

निष्कर्ष :–

व्यक्ति की पहचान जाति से होती है यह बहुत बड़ी सामाजिक समस्या हैं । दलितों को अपनी जाति के कारण कई जगह पर बदनाम होना पड़ता है । समाज जाति व्यवस्था, छुआछूत और बहिष्कार जैसी अमानवीय धारणाओं में अटका हुआ है । वर्तमान समय में भी दलित सुरक्षित नहीं है । उन्हें आंतकित रहकर जीवन यापन करना पड़ता है । गाँव की सामाजिक संरचना में दलितों की स्थिति चिंताजनक है । गाँव में दलितों को अपमानित और उत्पीड़ित होना पड़ता है ।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. संपा. डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय, अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य, पृ.116
2. संपा. डॉ.सदानंद भोसले, साहित्य सौरभ, पृ.90
3. वही, पृ.92
4. वही, 93
5. संपा. जयप्रकाश कर्दम, ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यक्ति, विचार और सृजक, पृ.233